गुरु नानक – सबद १५

मंनै सुरत होवै मन बुध ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंनै सुरत होवै मन बुध ॥
मंनै सगल भवण की सुध ॥
मंनै मुह चोटा ना खाइ ॥
मंनै जम कै साथ न जाइ ॥
ऐसा नाम निरंजन होइ ॥
जे को मंन जाणै मन कोइ ॥१३॥

सार: स्वीकृति विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जो कल्याण और परिवेश को प्रभावित करती है। यह स्वयं को और सृष्टि को जानने का दृष्टिकोण देती है जो मानवीय अस्तित्व का आधार है।

मंनै सुरत होवै मन बुध ॥
जो स्वीकृति के लाभ को समझते हैं वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें अपनाते हैं और उनको आत्मसात कर लेते हैं।

मंनै सगल भवण की सुध ॥
जो स्वीकृति को अपना लेते हैं वह संपूर्ण सृष्टि के सार से अवगत हो जाते हैं।

मंनै मुह चोटा ना खाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह विपत्ति और उसके कष्टों से प्रभावित नहीं होते हैं।

मंनै जम कै साथ न जाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह मृत्यु या जन्म से नहीं जुड़ते।

ऐसा नाम निरंजन होइ ॥

ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंन जाणै मन कोइ ॥१३॥

जो लोग स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि स्वीकृति का अर्थ है विचारों के प्रवाह से जुड़े बिना उनको आने और जाने की अनुमति देना।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com